Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2021: 7.278, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, JUNE-JULY, 2022, VOL-10/52

वृक्षारोपण : पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान

विजय नरायन सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल, श्री चित्रगुप्त पी0जी0 कॉलेज, मैनपुरी

Paper Received On: 25 JULY 2022

Peer Reviewed On: 31 JULY 2022

Published On: 1 AUGUST 2022

Abstract

वन किसी भी क्षेत्र या समाज की अमूल्य सम्पत्ति है। वन रोजगार का सृजन करने, जलवायु को सन्तुलित रखने, मृदा अपरदन को रोकने व प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या की इच्छाएँ, लोभ, लालच और स्वार्थों की पूर्ति एवं लिप्सा ने मनुश्य का ध्यान हरे–भरे वनों की ओर आकर्शित किया और स्वार्थी मनुश्य ने अपने परम हितैशी वृक्षों का सफाया करना आरम्भ किया। फलस्वरूप वन मैदान में बदलते जा रहे हैं और हरे–भरे पहाड़ नंगे होते जा रहे हैं जिससे विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्यायें जैसे– बढ़ता तापमान, सूखे की स्थिति, गिरता भूजल स्तर, भूस्खलन, अपरदन, पर्यावरण प्रदूशण, मरुस्थलीकरण, जलवायु परिवर्तन समूचे वि व के लिए चिन्ता का विशय होती जा रही है। इन इन समस्याओं का एक सस्ता व सरल उपाय ढूँढ़ने का प्रयास करें तो एक ही उत्तर प्राप्त होगा– ''वृक्षारोपण''। केवल वृक्ष ही है जो इन पर्यावरणीय समस्याओं से प्राणी जगत की रक्षा कर सकते हैं। एक अकेला वृक्ष एक साल में 117 किग्रा ऑक्सीजन देता है व करीब 20 किग्रा कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस सोखता है। 4 डिग्री सेग्रे का तापमान नियंत्रण करता है एवं 8 किग्रा तक मरकरी, लीथियम व लैड जैसे घातक तत्वों को सोखता है। एक वृक्ष एक किमी0 तक भुद्ध प्राणवायु फैला सकता है। अतः जीव समुदाय अपना संरक्षण करना चाहता है तो उसे वनों को संरक्षित करना होगा।

Scholarly Research Journal's** is licensed Based on a work at **www.srjis.com

प्रस्तावना

वन किसी भी क्षेत्र या समाज की अमूल्य सम्पत्ति है। वनों से हमारे समाज को न केवल जलाने के लिए लकड़ी प्राप्त होती है बल्कि इससे उद्योगों को कच्चा माल, औशधियाँ, पशुओं को चारा विभिन्न जीव–जन्तुओं का आवास तथा सरकार को राजस्व प्राप्त होता है। साथ ही वन रोजगार सृजन करने, जलवायु को संतुलित रखने, मृदा अपरदन को रोकने व प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाने में अपने महती भूमिका का निर्वहन करते हैं।

वन पर्यावरण की अनुकूल दशाओं में तदनुरूप स्वतः विकसित होने वाली प्राकृतिक सम्पदा है। वनों के अन्तर्गत सभी प्रकार के वृक्षों, झाड़ियों तथा पौधों को सम्मिलित किया जाता है। वनस्पतियाँ भौतिक पर्यावरण से सर्वाधिक प्रभावित होती हैं। जैविक पर्यावरण में मानव तथा वनस्पतियाँ दोनों को सम्मिलित किया जाता है तथा इनका सम्बन्ध भी परस्पर अन्योन्याश्रित होता है। यदि ऐतिहासिक

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

दृश्टिकोण से देखा जाए तो मानव जाति का विकास ही वनस्पतियों के मध्य रहकर ही हुआ है। वनों में रहकर ही हमारे मनीशियों ने वेदों और पुराणों की रचना की तथा विश्व को भाान्ति बन्धुता का पाठ पढ़ाया। वास्तव में वन व मानव के समरसता पूर्ण सम्बन्धों पर ही हमारे सामाजिक पर्यावरण का अस्तित्व निर्भर है।

वनों की सुरक्षा के साथ पर्यावरण की रक्षा तो होती ही है उसका आवश्यक संतुलन भी बना रहता है। आज के आधुनिक युग में हम वनों के महत्त्व को भूल कर उपयोगवादी दृश्टिकोण अपनाते जा रहे हैं। वन सम्पदा के अति दोहन के कारण कभी न समाप्त होने वाले इस संसाधन को हम सीमित करते जा रहे हैं।

जैसे–जैसे आधुनिक सभ्यता का विकास होता गया उसके साथ–साथ मनुश्य की इच्छायें, लोभ–लालच और स्वार्थों की पूर्ति एवं लिप्सा में मनुश्य का ध्यान हरे–भरे वनों की ओर आकर्शित किया है और स्वार्थी मनुश्य ने अपने परम हितैशी वनों का सफाया करना आरम्भ किया। फलस्वरूप वन मैदान बनते जा रहे हैं और हरे–भरे पहाड़ नंगे होते जा रहे हैं, जिनके परिणामस्वरूप अनेक वनस्पतियाँ और औशधीय पौधे मुरझाकर जड़–मूल से समाप्त हो रहे हैं। साथ ही अनेक पशु–पक्षियों की प्रजातियाँ प्राकृतिक आवास के अभाव में लुप्त होते जा रहे हैं। बढ़ता तापमान, सूखे की स्थिति, गिरता भूजल स्तर, भूस्खलन, अपरदन, मरुस्थलीयकरण, पर्यावरण प्रदूशण, जलवायु परिवर्तन जैसी पारिस्थितिकीय समस्यायें समूचे विश्व के लिए चिन्ता का विशय होती जा रही हैं।

आज जिस प्रकार की नवीन परिस्थितियाँ बन गई हैं, जिस तेजी से नये–नये कल–कारखानों, उद्योग–धन्धों की स्थापना हो रही है, नये–नये रसायन, गैसें, कोबाल्ट आदि बमों का निर्माण एवं परीक्षण जारी है। जैविक शस्त्रास्त्र बनाए जा रहे हैं। इन सभी ने हमें गैसों एवं कचरे आदि के निरन्तर निस्सरण से मानव तो क्या सभी तरह के जीव–जन्तुओं का पर्यावरण अत्यधिक प्रदूशित हो गया है। केवल वन ही हैं जो इस विशैले और मारक प्रभाव से प्राणी जगत की रक्षा कर सकते हैं। उन्हीं के रहते समय पर उचित मात्रा में वर्शा होकर धरती की हरियाली बनी रह सकती है। हमारी सिंचाई और पेयजल की समस्या का समाधान भी वन संरक्षण से ही सम्भव हो सकता है।

एक अकेला वृक्ष एक साल में 117 किग्रा ऑक्सीजन देता है व करीब 20 किग्रा कार्बन डाइ ऑक्साइड गैस सोखता है। 4 डिग्री सेग्रे का तापमान नियंत्रण करता है एवं 8 किग्रा तक मरकरी, लीथियम व लैड जैसे घातक तत्वों को सोखता है। एक वृक्ष एक किमी0 तक भाुद्ध प्राणवायु फैला सकता है। खाद्य एवं कृशि संगठन के महानिदे ाक रहे जोसे ग्रेजियानो द सिल्वा वनों के महत्त्व को बताते हुए कहते हैं कि वनों का योगदान मानव जाति के सभी कार्यों के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इन्हीं से दुनिया में जीवन–यापन, स्वास्थ्य, खेती, जल, जमीन आदि व्यवस्था बेहतर तरीके से टिकी है। इतना ही नहीं खाद्य–सुरक्षा व टिम्बर का एकमात्र स्रोत वन ही हैं।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

जिस दिन वन नहीं रह जाऐंगे, सारी धरती वीरान, बंजर और रेगिस्तान बन जाएगी, तब धरती पर वास कर रहे सभी प्राण–प्रजातियों का अन्त हो जाएगा। वनों के कम होते जाने के कारण अभी तक प्राणियों की अनेक प्रजातियाँ, अनेक वनस्पतियाँ एवं अन्य खनिज तत्व अतीत की भूली बिसरी कहानी बन चुके हैं। यदि आज की तरह ही निहित स्वार्थों की पूर्ति एवं अपनी शान–शौकत दिखाने के लिए वनों का कटान होता रहा तो धीरे–धीरे अन्य सभी का भी सुनिश्चित अन्त हो जाएगा।

उपर्युक्त सभी तरह के तथ्यों के आलोक में ही आज के वैज्ञानिक, पर्यावरणविद् व विद्वान आदि वन संरक्षण की बात जोर–शोर से कह रहे हैं। हमारे पूर्वज वृक्षों के महत्त्व से भली–भाँति परिचित थे। सम्भवतः इसीलिए वे अनेक वृक्षों की पूजा किया करते थे। आज भी कुछ लोगों को वृक्षों की पूजा करते देखा जा सकता है। भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत वृक्षों में देवताओं का निवास माना गया है। अतः वृक्षों की सुरक्षा को विशेश महत्त्व दिया गया है। ''रागिनी विलास'' में लिखा गया है– ''

धत्ते भरं कुसुम–पत्र–फलावलीनां
धर्म–व्यथां वहति शीतभवं रूजंच।
यो देहमर्पयति चान्य–सुखस्य
हेतोः तस्मै वदान्य–गुरवे तरवे नमोस्तु।।

अर्थात् जो वृक्ष फल–पत्तों तथा फलों के बोझ को उठाये धूप की तपन और शीत की पीड़ा सहन करता है एवं पर सुख के लिए अपना शरीर अर्पित कर देता है, उस वन्दनीय श्रेशठतर को नमस्कार।

मत्स्य पुराण में तो यह तक कहा गया है–

दश कूप समावापी, दशवापी–समोह्नद्रः।
दशह्नद समः पुत्रोः, दशपुत्रो समोद्रुमः।।

अर्थात् दस कुओं के बराबर एक बावड़ी है, दस बावड़ियों के बराबर एक तालाब, दस तालाबों के बराबर एक पुत्र है तथा दस पुत्रों के बराबर एक वृक्ष है। विश्व में ऐसा कोई भी देश नहीं है जिसकी ऐसी समृद्ध अरण्य संस्कृति रही हो। हमारे आस–पास हो रहे एक प्राकृतिक सम्पदा के विनाश से हम अंजान नहीं हैं। प्रकृति लगातार निकट आ रहे खतरे के संकेत हमें देती रहती है। पिछले वर्श के समान इस वर्श भी ठण्ड का कम पड़ना एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण संदेश था जिस पर ध्यान नहीं दिया गया। कम वर्शा से भूमि का गिरता जल स्तर इस बात का महत्त्वपूर्ण संकेत है कि मानव अस्तित्व खतरे में है।

प्रतिवर्श 21 मार्च को अन्तर्राश्ट्रीय वन दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसकी घोशणा संयुक्त राश्ट्र महासभा ने 21 दिसम्बर 2012 में की थी। इसका उद्देश्य पेड़ों व वनों के महत्त्व पर प्रकाश डालना है तथा भविश्य में आने वाली पीड़ियों के लिए वनों के लाभ सुनिचित करना है इस अवसर पर अन्तर्राश्ट्रीय, राश्ट्रीय तथा स्थानीय स्तरों पर वनों के महत्त्व के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। पहली बार 21 मार्च 2013 को अन्तर्राश्ट्रीय वन दिवस

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

मनाया गया था। इस वर्श अन्तर्राश्ट्रीय वन दिवस की थीम थी ''वन और जैव विविधता (Forest and Biodiversity)''।

केवल योजनाओं एवं संगोश्ठियों से यह समस्या नहीं सुलझ सकती। यदि इन सभी समस्याओं को एक सस्ता व सरल उपाय ढूँढ़ने का प्रयास करें तो एक ही उत्तर प्राप्त होगा– ''वृक्षारोपण''। समस्या ग्लोबल वार्मिंग की हो या अकाल पड़ने की हम हम समस्या खोजते हुए निर्णय तक पहुँचते हैं तो केवल वृक्ष ही समाधान बनकर समक्ष आते हैं। पर्यावरण संरक्षण की बढ़ती चुनौतियों के बीच निश्चित रूप से वृक्षारोपण एक सराहनीय कार्यक्रम है। परन्तु वृक्षारोपण करने में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। जैसे– नगरीय क्षेत्रों में मिट्‌टी में पूर्ण तत्वों का अभाव, छुट्‌टा पशुओं की समस्या, पौधों को सिंचाई हेतु पानी की अनुपलब्धता, मनुश्य की पेड़–पौधों के प्रति संवेदन हीनता भी अपने आपमें एक गम्भीर समस्या है। वन वृक्षारोपण का कार्य पूर्णता समर्पण व धैर्य के माँग करता है क्योंकि पौधों के रोपण के बाद इन्हें बड़ा करने हेतु नियमित रूप से बच्चों की भाँति देखभाल करनी पड़ती है।

सरकार द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए व्यक्ति, संस्था, कृशक, राजकीय विभाग, महिलाऐं, विद्यार्थी, शिक्षक, ग्राम पंचायत व वन विभाग का सहयोग लिया जा रहा है एवं वृक्षों की संख्या बढ़ाने के लिए वन भूमि, निजी भूमि, कृशि भूमि, ऊसर, बंजर, खाली पड़ी जमीन, राजकीय भूमि, सामुदायिक भूमि, शिक्षण संस्थाओं की भूमि, रेल, रोड व नहर के किनारे की भूमि का उपयोग किया जा रहा है। ये निश्चित रूप से रचनात्मक पहल है।

वृक्षारोपण को जो भी अभियान चलाया जा रहा है उसमें वृक्षों के दीर्घकालीन रखरखाव व प्रबन्धन के लिए कोई पुख्ता व्यवस्था नहीं की गई है जिसके कारण वृक्षारोपण के बाद एक साल के अन्दर ही पौधे बड़ी संख्या में सूख जाते हैं या अन्य किसी कारण से नश्ट हो जाते हैं। वृक्षारोपण एक बार किया जाता है लेकिन उसके बाद नये रोपित वृक्षों को देखभाल की जरूरत होती है। एक साल में इन वृक्षों की सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य निराई, गुड़ाई व सिंचाई होनी चाहिए। वृक्षारोपण अभियानों के दौरान ये देखने में आता है कि एक बार वृक्ष लगाने के बाद उसकी तरफ दोबारा ध्यान देने कोई नहीं जाता। ऐसे में वृक्षों के आस–पास घास एवं खरपतवार उग आता है और सिंचाई न होने के कारण ये पेड़ जल्द ही सूख जाते हैं। यदि किसी तरीके से सूखने के बच जाते हैं तो उन्हें आबारा पशु खा जाते हैं। यही कारण है कि वृक्षारोपण अभियानों के बावजूद वृक्षों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि नहीं हो पा रही है।

वृक्षारोपण अभियान को मनरेगा जैसी जनकल्याणकारी योजनाओं के साथ जोड़ दिया जाए तो बेहतर परिणाम हासिल किए जा सकते हैं। साथ ही स्थानीय लोगों को रोजगार के मौके उपलब्ध होंगे। जब ग्रामवासियों को शुरूआती दौर से ही प्रत्यक्ष लाभ मिलना शुरू हो जाएगा तो वे इस अभियान में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेंगे। मन्दिर में प्रसाद के रूप में पौधे के प्रयोग से जनमानस को वृक्षारोपण एवं पौधे के रखरखाव के लिए प्रेरित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पशुचारण पर नियंत्रण, उच्च

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कोटि के बीज का प्रयोग, स्थायी देखरेख, ट्री गार्ड का प्रयोग, सही पौध शाला तकनीकि का प्रयोग, उचित आकार की पौध का उपयोग आदि भी वृक्षों की संख्या में उल्लेखनीय योगदान दे सकते हैं।

उक्त सभी परिस्थितियों को देखते हुए यह आवश्यक है कि पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने के लिए वृक्षारोपण के साथ–साथ वृक्षों का तार्किक ढंग से उपयोग भी होना चाहिए। साथ ही हमें वृक्षारोपण कार्यक्रम को भी गम्भीरता से लेना चाहिए। हर वर्श होने वाले वन महोत्सव को एक त्योहार न समझकर उसे पर्यावरण की रक्षा के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करना चाहिए जिससे पेड़ों की संख्या में वृद्धि होगी। परिणामस्वरूप तापमान में गिरावट, भूक्षरण में कमी, वर्शा में वृद्धि, भूजल स्तर में वृद्धि, धरती की उर्वर भाक्ति में वृद्धि, पेयजल की समस्या का समाधान, मरुस्थलीयकरण में कमी होगी। साथ ही पर्यावरण स्वस्थ एवं सतुलित होगा।

अतः जीव समुदाय यदि अपना संरक्षण चाहता है तो उसे वनों को संरक्षित करना होगा।

वनेन जीवनं रक्षेत, जीवनेन वनं पुनः।

मा वनानि नरश्छिन्देत जीवनं निहितं वने।।

सन्दर्भ ग्रंथ

योजना मासिक पत्रिका, अप्रैल 2018
कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, मई 2019
दैनिक जागरण समाचार पत्र, 6 अक्टूबर 2019
दैनिक जागरण समाचार पत्र, 18 जनवरी 2021
पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी– डॉ0 वी0पी0 राव।

Copyright © 2022, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language